Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 13-02-2020; Accepted: 15-03-2020; Published: 23-03-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 07-09

प्राचीन काल से अब तक किसानो की दशा एवं दिशा का स्वरूप

Suniti Tyagi
Suniti Tyagi, HEC Group of Institutions, Haridwar, Uttarakhand, India

सारांश
किसान कोई सामान्य मनुष्य नही होता वह एक ऐसा प्राणी होता है जिससे समूचे जगत को पालने की क्षमता उसके संस्कारो से मिली होती है। इसलिए कृषि को संस्कृति और किसान को सृष्टि का पालनहार कह दिया है। हमारी संस्कृति का मूल स्रोत कृषि है भारत में 900 ईसा पूर्व तक पौधे उगाने फसलें उगाने का काम शुरू हो गया था। ऋग्वेद और अर्थर्ववेद में कृषि संबंधी अनेक ऋचाएं है। वेदों में कृषि को यज्ञ या सर्वश्रेष्ठ कार्य का दर्जा दिया गया । आधुनिक हिन्दी साहित्य भारतीय किसान जीवन के बिना पूर्ण नही होगा आधुनिक हिन्दी साहित्य ने कृषक–संस्कृति के विभिन्न पक्षों और उसकी दारूण व्यथा को नए सिरे से साहित्य का विषय बनाया। कृषि ने मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मूल शब्द: संस्कृति, किसान, संस्कारो

प्रस्तावना

जीवन एक संस्कृति है कहना जाए तो संस्कृति ही जीवन है यह अतिश्योक्ति न होगी। भारत में जीवन और संस्कृति दोनो पर ही अतिशय गंभीर चिन्तन की परम्परा रही है। तात्पर्य यह है कि संस्कृति ही वह प्राण है जिसमें जीवन के होने का आभास होता है। जीवन में प्रवाह की गति ही संस्कृति का निरूपित कर रही है। मनुष्य जिस भी रूप में जहॉ भी अपने कार्य क्षेत्र में विधमान है उसके साथ उसकी संस्कृति के सभी मूल तत्व स्वतः विधमान है जो उसके मनुष्य के रूप में परिभाषित करने के लिए आवश्यक लगते है यथा कोई शिक्षक है तो उसमें शिक्षक की पूरी संस्कृति निहित मानी जायेगी। इसी प्रकार कोई किसान है तो किसान की भूमिका वाली पूरी की पूरी संस्कृति उसमें समाहित होती है। किसान या कृषक कोई सामान्य मनुष्य भी नही होता,वह एक ऐसा प्राणी होता है जिसमें समूचे जगत को पालने की क्षमता उसके संस्कारों से मिली होती है इस पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए गहरे विचारो के साथ चिंतन की प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ेगा। कृषक होना ही अपने आप में एक सृष्टि रचने जैसा है। जरा सोचिए.....एक किसान के आलावा इस जगत के किस प्रोफेशनल में इतना माद्दा है कि अपनी गाढी कमाई में से सृष्टि के अनगिनत प्राणियों को बॉटने के बाद केवल बचे खुचे को लेकर अपने घर जाये और फिर भी किसी से शिकायत नहीं। यही तो है भारत का किसान और यह है उसकी संस्कृति । भारत यूँ ही भारत नही है मॉ भारती इसलिए मॉ भारती है क्योकि उसकी संतानो में सबसे बड़ा किसान है। कृषि उसकी संस्कृति है इसलिए कृषि को संस्कृति और किसान को सृष्टि का पालनहार कह दिया है भारतीय कृषक का मूल स्रोत उसका सच्चा स्वरूप ग्राम जीवन से ही प्राप्त होता है हमारी संस्कृति का मूल स्रोत कृषि है। हमारा सारा सांस्कृति प्रसार कृषि और ग्राम जीवन में ही परिव्याप्त है मनुष्य के रूप में एक सामाजिक सदस्य के रूप में वह जो सोचता है करता है वह सब जटील सांस्कृतिक चक्र में बंधा है। भारत में 9000 ईसा पूर्व तक पौधे उगाने फसले उगाने तथा पशु पालने और कृषि करने का काम शुरू हो गया था। दोहरा मानसूनी होने के कारण एक ही वर्ष में दो फसलें ली जाने लगी। इसके फलस्वरूप भारतीय कृषि उत्पाद तत्कालिन वाणिज्य व्यवस्था के द्वारा विश्व बाजार म

ं पहुचंना शुरू हो गया आज से पॉच हजार वर्ष पूर्व कृषि अत्युन्त अवस्था में थी और लोग राजस्व अनाज के रूप में चुकाते थे कपास जिसकें लिए सिध की आज भी ख्याति है उन दिनो भी प्रचुर मात्रा में पैदा होता था ऋग्वेद और अर्थर्ववेद में कृषि संबंधी अनेक ऋचाएॅ है जिनमें कृषि संबंधी उपकरणों का उल्लेख तथा कृषि विधा का परिचय है। पाणिनी की अष्टाधायी में कृषि संबंधी अनेक शब्दों के चर्चा है जिससे तत्कालिन कृषि व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। भारत में ऋग्वैदिक काल से ही कृषि पारिवारिक उधोग रहा है और बहुत कुछ आज भी उसका रूप है।

कविता या साहित्य मनुष्य की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की सबसे प्राचीन विधा है और कृषि कार्य भी एक प्राचीनतम पेशा है ऐसी स्थिति में प्राचीन ग्रंथो में आदि मानव के इस आदि व्यावसाय से जुड़ी गतिविधियों का उल्लेख होना स्वाभाविक है वेदों में कृषि कार्य को यज्ञ या सर्वश्रेष्ठ कार्य का दर्जा दिया गया है सभी ऋषि–मुनियो ने कृषि कर्म को सर्वोपरी सम्मान दिया है रामविलास शर्मा ने वेदो में खेती करने वाले ऋषि मुनियों का विशेष रूप से उल्लेख किया है। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में कृषि का गौरवपूर्ण उल्लेख मिलता है। हमारे समाज में जन–उक्ति–कृषि कार्यकी श्रेष्ठता को अभिव्यक्त करती है–'' उत्तम खेती मध्यम बान,नीच चाकरी कुक्कर निदान''। खेती से अन्न उत्पादित होने तक करोडों सूक्ष्म जीवियों से लेकर गाय–बैल आदि पशुओं एवं करोड़ो लोगों का पेट भरता है। इस प्रकार ऋग्वेद एवं उत्तर वैदिक काल में आर्यो का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। भक्तिकालीन साहित्य और रीतिकालीन साहित्य में घाघ और भड्डरी जैसे कवियों ने समय–समय पर कृषि संबधित अनुभवों और वर्षा एवं मौसम पूर्वानुमान व्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर,जायसी,सूर, तुलसी से लेकर जयशंकर प्रसाद,निराला,माखनलाल चतुर्वेदी, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल,शिवमूर्ति, इत्यादि साहित्यकारों ने किसान को केंद्र मे रखकर कृषि कार्यो एवं उससे जुड़ी समस्याओं और उनके

जीवन–यापन के तौर–तरीकों को अपनी रचनाओं में आध्यत्मिक चेतना और जीवनानुभूति को बड़ी ही सूक्ष्मता से कृषि संबंधी कार्य–व्यापार से जोड़ा है उन्होने कृषि कार्य साधना प्रक्रिया का समान धर्मी माना है

''ज्ञान कुदार ले बंजर गोड़े,नाम का बीज बुआवै।
सूरत सुरावन नय कर फेरे, ठेला रहन न पावै।
उलटी–पलटि के खेत को जोते, पूर किसान कहावै।।''

आधुनिक काल में मैथलीशरण गुप्त साकेत में होने वाली फसल की स्थिति का जायजा सीता के म ुख से लेते है '' कैसी हुई कपास, ईख धान की? छायावादी साहित्य या यों कहा जाए कि आधुनिक हिन्दी साहित्य भारतीय किसान जीवन के बिना सम्पूर्ण नही होता। आधुनिक हिन्दी साहित्य ने कृषक–संस्कृति के विभिन्न पक्षों और उसकी दारूण व्यथा को नए सिरे से साहित्य का विषय बनाया। कृषि–व्यवस्था केवल अर्थव्यवस्थ नही होती बल्कि एक मुकम्मल सभ्यता–संस्कृति होती है । निराला जी का कृषक जीवन से अनन्य सम्बन्ध है चाहे कविता 'बादल राग' हो या उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा'। एक किसान के लिए बादलों के उमड़–घुमड़ कर बरसने का क्या महत्व है इसे उनकी 'बादल राग' में देखा जा सकता है। भारत की संस्कृति का मुख्य पक्ष कृषि संस्कृति है जिसे बनाने मे किसान–समाज की भूमिका है। प्रेमचंद ने कृषक संस्कृति को साहित्य के केन्द्र में प्रतिष्ठित किया। उनके पहले तथा बाद में किसी भी रचनाकार ने इतने विस्तार से किसान जीवन को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य सृजन नही किया। किसान प्रारम्भ से साहित्य सर्जना के केन्द्र में रहा है इसके अग्रणी नाम प्रेमचंद जी का है जिन्होने अपने पहले ही उपन्यास सेवासदन के 'चैतू प्रसग' में पाठको को यह संदेश दे देते हैं कि उनके साहित्य की दशा और दिशा क्या होने वाली है। प्रेमाश्रम,कर्मभूमि, गोदान को किसान जीवन पर लिखे गए प्रेमचंद के उपन्यासों की वृहत्त्त्रयी कहा जा सकता है। रामविलास शर्मा के अनुसार –''प्रेमचंद जी ने उस धड़कन को सुना जो करोडों किसानों के दिल में हो रही थी। उन्होने उस उछूते यर्थाथ को अपना कथा–विषय बनाया जिसे भरपूर निगाह देखने का हियाव ही बडो–बडो को न हुआ था। '' इस अछूतं यर्थाथ में किसान है उनके सुख–दुख है,उनके शोषणके विविध रूप है,उनके शोषकों के गठजोड़ है और साथ में है, इस शोषण के विरोध में किसान की क्रांति चेतना। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किसानों का शोषण करने वाले सभी वर्गो की पहचान की है और गठजोड़ का पर्दाफाश किया है सिर्फ सामन्त ही किसानों का शोषण के लिए उत्तरदायी नही बल्कि वह तो इस शोषण के तंत्र का छोटा पुर्जा मात्र है। सामन्त के अतिरिक्त महाजन,धार्मिक ,मठाधीश,प्रशासन सभी किसानों के शोषण में शामिल है। प्रेमचंद ने किसानों के शोषण में पूँजीवादी महाजनों की भूमिका को बखूबी रेखांकित किया है।

आज का भारत प्रेमचंद भारत से काफी बदला हैं। साथ में किसान के जीवन शैली में भी कुछ बदलाव दिखाई दिया है। एक वैश्विक ग्राम या बाजारवाद का प्रभाव समाज में दिखाईदे रहा है। कार्पोरेट कंपनियों का लगातार विस्तार हो रहा हैं। किसान की उपजाऊ जमीनों को पूजीपतियों द्वारा अपार्टमेंट में बदला जा रहा है । भारत कृषि प्रधान देश माना जाता है । समय की मांग के अनुसार कृषि उत्पादन में परिवर्तन होना लाजमी है। इंग्लैड़ से भारत तक का औधौगिक क्रांति का संकट और भारत में हरित क्रांति होने से कृषि उत्पादन में काफी बदलाव आया है परन्तु किसान किसी ना किसी रूप में शोषित और प्रताड़ित रहा है जिसकी अभिव्यक्ति उपन्यासकारों ने की है। ''फॉस'' उपन्यास कथाकार संजीव द्वारा लिखित है जो महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र मे निवास करने वाले किसानों के जीवन पर आधारित है। यह उपन्यास सबका पेट भरने वाले और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों द्वारा किए जा रहे आत्महत्या पर केन्द्रित है। कथाकार संजीव का यह उपन्यास भारतीय कृषक समस्या की दारूण दशा पर केन्द्रित है। फॉस उपन्यास के माध्यम से संजीव उन सभी पहलुओं को दिखाने की कोशिश करते है जिन पहलुओं से केवल विदर्भ का किसान ही नही बल्कि सम्पूर्ण भारतीय किसानों को गुजरना पड़ रहा है। हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि किसान लगातार आत्महत्या कर रहा हैं संजीव का उपन्यास सामाजिक संरचना के तमाम जटिलताओं को परत–दर–परत भेदते हुए समस्या और विकास के नाम पर जारी उपक्रमों की समीक्षा करता है। यह किसान जो कभी ''भारत की आत्मा'' के नाम से जाना जाता रहा है वही आज अपनी गरीबी भरी ज़िदगी से टूटकर आत्महत्या कर रहा है यह एक किसान की आत्महत्या नही है बल्कि यह किसानी संस्कृति की हत्या है। भारत में एक विमर्श स्तर पर है कि कृषि को कैसे पुनजीर्वित किया जाए। आए दिन कर्ज में डूबे किसानो की मौत खबरें भारतीय कृषि में काला अध्याय जोड़ रही है भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि और किसान है किसानों की उन्नति से ही देश की उन्नति संभव है कृषि एक मुख्य विकास था जो सभ्यताओं के उदय का कारण बना इसमें अधिक घनी आबादी और स्तरीकृत समाज विकास को सक्षम बनाया। कृषि ने मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। औद्योगिक क्रांति से पूर्व मानव आबादी का अधिकांश हिस्सा कृषि में ही कार्यरत था। हरित क्रांति में विकसित दुनिया के द्धारा विकासशील दुनिया को तकनीक का निर्यात किया गया। हरित क्रांति ने ''उच्च उत्पादकता की किस्मों''के निर्माण के द्वारा उत्पादन को कई गुना बढ़ाने के लिए पारंपरिक संस्करण के उपयोग को लोकप्रिय बना दिया। भारत शब्द सुनते ही विश्व के अधिकतर लोगो के दिमाग में एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना होने लगती है जिसके पास एक लंबी सांस्कृतिक ऐतिहासिक विरासत के साथ कृषि प्रधान देश होने का गौरव प्राप्त है। भारत की लगभग 70% आबादी गॉव में रहती है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन है। किसान महज एक शब्द नही है यह भारतीय समाज की एक ऐसी जमात है जो न केवल पूरे देश का भरण–पोषण करते है,बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मुख्य संरक्षक भी है। इन्हें भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत का असली हकदार कहना गलत नही होगा।

किसानो की आत्महत्या पर केंद्रित पंकज सुबीर के नये उपन्यास''अकाल में उत्सव''की समीक्षा में लेखक ने बड़ी कुशलता से बल्कि सच कहूं तो एक कृषि अर्थशास्त्री और सांख्यिकी विशेषज्ञ की हैसियत से किसान की उपज मूल्य को आज के उपभोक्ता सूचकांको के सापेक्ष विश्लेषण की कसौटी पर जांचा है। लेखक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के उत्पादों को कच्चे उत्पादों के बीच गणित बहुत ही सरल अन्दाज से समझाता है पद्रंह सौ रूपये क्विंटल के समर्थन मूल्य पर बिकने वाली मक्का का मुर्गी छाप कार्न फ्लैक्स 150 रूपये में 500 ग्राम की दर से बिकता है मतलब यह कि 300 रूपये किलो या तीस हज़ार रूपये क्विंटल की दर से पन्द्रह सौ और तीस हज़ार के बीच बीस गुना का फर्क है। क्या एक सीधा सा लॉजिक किसी को नही दिखता है कि जो किसान धूप,बरसात, ठंड,में खेतों में अपनी ज़िदगी को झोंकते हुए पॉच महीने में जो फसल पैदा करता है, उसे केवल 1500 रूपये क्विंटल मिल रहा है और जो वातानुकूलित चैम्बर में बैठकर मशीन से उस मक्का को केवल पॉच मिनट में चपटा कर कॉर्न फ्लैक्स बना रहा है उसे बीस गुना, तीस हज़ार रूपये? समर्थन मूल्य तो है मगर वह किसको समर्थन देने के लिए बनाया गया है यह बेचारा किसान कहॉ जानता है। बहरहाल ''अकाल में उत्सव'' हमारे समय का महत्वपूर्ण उपन्यास है जो यह दिखाता है कि हम सामानान्तर रूप से एक ही देशकाल परिस्थिति में दो अलग–अलग ज़िन्दगियॉ जी रहे हैं। एक ओर दबा कुचला हिन्दुस्तान है और हिन्दुस्तान का किसान है जिसकी दुनिया अभी भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सही टिकी है और दूसरी तरफ चमकता–दमकता इण्डिया है जहॉ तकनीकी की प्रगति है, धन है,अवसर

है। लेखक पंकज सुबीर ने ''अकाल में उत्सव'' के माध्यम से एक ऐसी कृति दी है जो हमारे देश को समझने के लिए महत्वपूर्ण औजार साबित हो सकती है किसी ने सही लिखा है–

कैसा है श्मशान देख ले, चल मेरा खलिहान देख ले।
अगर देखना है मुर्दा तो, चलकर एक किसान देख ले।
सर्वनाश का सर्वे कर–कर, पटवारी धनवान देख ले।
कुर्की की डिक्री पर अंकित, गिरता हुआ मकान देख लें
कल पेशी है तहसील में, को दो कुटकी धान देख ले।
सम्मन मिला कचहेरी से है, अधिग्रहण फरमान देख ले।
तस्वीरों के पार झॉक कर, गॉव का उत्थान देख ले।
डिजिटल इंडिया से बाहर आ, आकर हिन्दुस्तान देख।।

निष्कर्ष

किसानो की मानसिकता बदल रही है और खेती से अपनी पीढ़ी तो नही पर अगली पीढी दूर रहे, कमाई का कोई और जरिया ढूंढने की मानसिकता बना बैठे है। हज़ार मुश्किलों,असुरक्षिताएं, आह्वानों, से किसानो का जीवन आधारहीन होकर टूटने की कगार पर है। भीमराव वाघचौरे द्वारा लिखित 'मूठमाती' मराठी कहानी संग्रह के माध्यम से किसानों कीं ज़िदगी और उसके पारिवारिक दुर्दशा का चित्र हमारे सम्मुख खड़ा होता है। रोज खून पसीना एक कर मेहनत करना और दो वक्त की रोटी भी नसीब न होना विडंबनापूर्ण है। इतनी मेहनत के बावजूद भी किसानों के हक की रोटी कौन चुराता है। प्रश्न खड़ा है सबके सामने। किसानो को सतुष्ट करने के लिए देश के नीति–निर्धारक समय–समय पर जो उपाय करते है, वे तात्कालिक राहत पहुॅचाने वाले होते है। जबकि ज़रूरत ऐसे संरचनात्मक उपायों की है जो दीर्घकालिक हों और किसानों की समस्या को स्थायी तौर पर हल कर सकें। भारतीय कृषि अभी सदियों पुराने ढर्रे पर ही, काम कर रही है आज मनुष्य के पास विभिन्न प्रकार की तकनीक मौजूद है, इन सबका इस्तेमाल कमोबेश कृषि क्षेत्र में किया जा सकता है। बेशक कृषि राज्यो का विषय है परन्तु इस मामले में केंद्र और राज्यों को मिलकर काम करने की जरूरत है। तभी किसानों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार आ सकता है।आज देश में कृषि शिक्षण विश्वविधालय और महाविधालय नाम मात्र के है जहॉ गुणवक्तापूर्ण शिक्षा और कृषि शोध, वित्तीय और तकनीकी सुविधाओं का अभाव है आज ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में भारतीय कृषि विज्ञान को मजबूत बनाने की जरूरत है ताकि भारतीय किसान कृषि की नई तकनीको को समझ सके और भारत की आर्थिक स्थिति को और भी अधिक मजबूत बनाने में अपना सहयोग दे सके।

संदर्भ सूची

1. दृष्टि द विजन, किसानों की समस्या के लिए चाहिए दीर्घ कालीन समाधान,10 जनवरी 2019
2. राजीव सिन्हा, साहित्य विमर्श, 18 मई 2019
3. भारतीय कृषि का इतिहास–विकिपीडिया
4. नवल किशोर, इंडिया हिन्दी वाटर पॉरटल –कुरूक्षेत्र दिसंबर 2011
5. खेतीहार संकट(IM4 change.org)
6. Deshi banjar,blog-post 28html,9/2017
7. प्रभा साक्षी न्यूज नेटवर्क– घोषणाओं में नही खेत मे छिपा है किसानो की समस्या का हल,1 अप्रैल 2019
8. सचिन गुप्ता,नई सदी के हिन्दी उपन्यास और किसान आत्महत्याऍ,सिंतबर 2017
9. डा0 ज्ञानचंद गुप्त,प्रेमचंद साहित्य विवेचन पृष्ठ–145
10. डा0 ज्ञानचंद गुप्त, स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना पृष्ठ–208
11. 10 विकास सिंह, द इंडियन वायर , भारतीय किसान पर निबंध,23 जुलाई2019
12. 11 विजय शंकर सिंह, किसान समस्या–अन्नदाता की व्यथा कथा 28 नवंबर 2018